बिना संस्कृत के आयुर्वेद का ज्ञान सम्भव नहीं

प्रोफेसर अनूप कुमार गक्खड़
ऋषिकुल परिसर, उत्तराखण्ड आयुर्वेद विश्वविद्यालय हरिद्वार
उत्तराखण्ड

वैदिक काल में पूर्ण रूप से विकसित हो चुकी देवभाषा संस्कृत को भारतीयों की प्राणभूत भाषा का गौरव प्राप्त हुया। भारत के सामाजिक, सांस्कृतिक, आध्यात्मिक एवं धार्मिक जीवन को अनुप्राणित करने वाली संस्कृत भाषा विश्व की समस्त परिष्कृत भाषाओं में प्राचीनतम है। वैदिक काल के ज्ञान को दर्शाने वाले अनंत ज्ञान के स्रोत चारो वेद हमारे राष्ट्र भारत की एक अमूल्य निधि है। भारतीय मनीषा का समस्त चिन्तन, मनन, गवेषण तथा लौकिक-अलौकिक सभी अनुभूति संस्कृत भाषा में समाहित भारत के गौरव के चरमोत्कर्ष का प्रतीक है। इससे एक नए विज्ञान, तुलनात्मक भाषाशास्त्र की नींव पड़ी। संस्कृत भाषा के बारे में कहा गया है कि उसकी प्राचीनता कुछ भी हो, इसकी संरचना ग्रीक की तुलना में अधिक परिपूर्ण, लेटिन भाषा की तुलना में अधिक प्रचुर और दोनों की तुलना में अधिक परिष्कृत है।

दक्षिण भारत की भाषाओं में मिलते हैं संस्कृत के शब्द

दक्षिण भारत की भाषाओं यथा तमिल, कन्नड, तेलगु, मलायलम, से संस्कृत आनुवंशिक रूप से सम्बन्धित नहीं है फिर भी उनमें संस्कृत भाषा के अनेक शब्द मिलते हैं। मलायलम में सबसे अधिक संस्कृत के शब्दों का प्रयोग हुया है। उसके उपरान्त कन्नड और तेलगु और अन्त में तमिल भाषा में संस्कृत के सबसे कम शब्द पाये जाते हैं। संविधान की आठवी अनुसूची में संस्कृत का नाम 22 भाषाओं में अंकित है और उत्तराखण्ड एवं हिमाचल प्रदेश में इसे द्वितीय भाषा का दर्जा प्राप्त है। प्राचीन, मध्यकालीन और आधुनिक काल की न केवल भारतीय भाषाओ, अपितु दुनिया की सभी भाषाओं की तुलना में संस्कृत का प्रयोग साहित्यिक कार्यों के लिए उपयोग में जारी रहा। युगों में व्याकरण की गुणवत्ता के कारण इस में स्थिरता बनी रही । पाणिनि की शास्त्रीय संस्कृत के साथ साथ गैर-वैदिक कार्यों, महाकाव्यों, कविता, दर्शन आदि में भी संस्कृत का उपयोग होता रहा। विश्व भाषाओं की सूची में इसका प्रयोग व्यापक अर्थ में किया जाता है और इसमें वैदिक भाषा भी शामिल है। संस्कृत साहित्य में सत्यं शिवं और सुन्दरं का

अद्भुत एवं प्रीतिकर समन्वय एवं सामंजस्य उपलब्ध होता है। संस्कृत साहित्य जीवन के केवल आध्यात्मिक पक्ष के साथ साथ लौकिक सुख प्रदान करने वाली विधाओं का वर्णन प्रेय और श्रेय प्रवृत्ति के रूप में चित्रित करता है।

संस्कृत एवं आयुर्वेद

संस्कृत का आयुर्वेद के साथ समवाय सम्बन्ध है। जिस प्रकार बिना संस्कृत के आयुर्वेद सीखना कठिन है उसी प्रकार आयुर्वेद के समावेश से संस्कृत का सौंदर्य दोगुना हो जाता है। आयुर्वेद को समझने में संस्कृत की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। आयुर्वेद में वर्णित दर्शन संस्कृत को अपने माध्यम के रूप में उपयोग करता है। विषयों का सूत्र अथवा श्लोकरूप में प्रस्तुति के बाद से अवधारणाओं को अच्छी तरह से समझना और याद रखना आसान हो जाता है। यथा प्रमेह रोग की उत्पत्ति का वर्णन एक ही सूत्र में कर दिया।

गृध्नुमभ्यवहार्येषु स्नानचङ्क्रमणद्विषम्।
प्रमेहः क्षिप्रमभ्येति नीडद्रुममिवाण्डजः।। च.नि. 4/50

कुष्ठरोग का संपूर्ण उपचार एक श्लोक में बताया गया है।

वातोत्तरेषु सर्पिर्वमनं श्लेष्मोत्तरेषु कुष्ठेषु।
पित्तोत्तरेषु मोक्षो रक्तस्य विरेचनं चाग्रे।। च.चि. 7/39

किसी भी विषय को समझने के लिए उसके मूल भाषा में लिखे ग्रन्थों से समझना श्रेष्ठ होता है। चूंकि आयुर्वेद के ग्रन्थ संस्कृत में लिखे हैं इसलिये उनको समझने के लिये संस्कृत का ज्ञान होना आवश्यक है। संस्कृत और आयुर्वेद एक साथ सीखने से विद्यार्थियों की दोनों विधाओं के सर्वश्रेष्ठ अंश को पूरी तरह से स्वीकार करने में सक्षम बनाता है। संस्कृत भाषा में विषय को समझाने के लिये उपमा का प्रयोग बहुलता से किया जाता है। यथा मनुष्य के लिये रसायन की उपयोगिता को स्पष्ट करने के लिये कहा है कि जैसे देवताओं के लिये अमृत और नागों के लिये सुधा का वर्णन प्राप्त होता है उसी तरह रसायन विधान मनुष्यों के लिये वर्णित है।

यथाऽमराणाममृतं यथा भोगवतां सुधा।
तथाऽभवन्महर्षीणां रसायनविधिः पुरा।। च.चि.1/78

इसी तरह शास्त्र के महत्व को एक सूत्र में समझाया है।

शास्त्रं ज्योतिः प्रकाशार्थं दर्शनं बुद्धिरात्मनः।
ताभ्यां भिषक् सुयुक्ताभ्यां चिकित्सन्नापराध्यति।। च.सू.9/24

तन्त्रयुक्ति,तन्त्रगुण,कल्पना, अर्थाश्रय, व्याख्या, ताच्छील्य, तन्त्रदोष आदि के प्रयोग से न केवल विषय का प्रस्तुतीकरण नवीन दृष्टि से होता है अपितु विषय के गूढ़ अर्थ भी आसानी से समझ आ जाते हैं। संस्कृत भाषा में आयुर्वेद पढ़ने से विषय का स्पष्टीकरण सुगमता से हो जाता है। गीता ग्रन्थ श्रव्य है पेय नहीं, इस के बावजूद गीतामृतम् कहना, भक्ष्य कल्पना से स्पष्ट किया है। एक विषय का ज्ञान किसी अन्य ग्रन्थ से प्राप्त करना को विद्या कल्पना के द्वारा स्पष्ट किया गया है। इस प्रकार संस्कृत सीखने के साथ-साथ आयुर्वेद के विज्ञान को समझने में भी बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। आयुर्वेद के ग्रन्थों में वर्णित विज्ञान अन्य विषयों के ग्रन्थों में भी उपलब्ध है। अतः उनकी जानकारी के लिये संस्कृत का ज्ञान आवश्यक है। संस्कृत भाषा के शब्दों में आयुर्वेद का गहरा ज्ञान निहित है, क्योंकि संस्कृत के कई शब्द अंग्रेजी में अनुवादित नहीं होते हैं। यह इस तथ्य के कारण है कि शब्द जिन अवधारणाओं को व्यक्त कर रहे हैं वे पश्चिमी संस्कृति में उपस्थित नहीं हैं। आयुर्वेद में अंतर्निहित दर्शन को समझने के लिए, हमें उन शब्दों से जुड़ना चाहिए जो इन अपरिचित विचारों को मूर्त रूप देते हैं।

संस्कृत में मंत्रोच्चार का प्रयोग मानस शुद्धि के लिये एक प्रभावी उपचार है। संस्कृत उच्चारण से सात्विक भावों की उत्पत्ति होती है। संस्कृत में किसी शब्द का अर्थ उसकी ध्वनि से अविभाज्य माना जाता है, इसलिए जब शब्दों का गलत उच्चारण किया जाता है, तो उनका अर्थ नष्ट हो जाता है।